पञ्चम अध्याय

शैक्षिक एवं व्यावसायिक संरचना

आजादी के बाद देश का विकास तेजी से हुआ है। गाँवों की तो मानों तस्वीर ही बदल गयी है। विकास की इस दौड़ में सबसे अधिक प ायदा आधी आबादी को मिला है जैसे–जैसे गाँवों का विकास हुआ वैसे–वैसे महिलाओं को उनके अधिकार मिले। लोगों में जागरुकता आयी और महिलायें हर क्षेत्र में आगे आने लगी हैं। स्वतन्त्रता के समय महिला साक्षरता सिर्प 8.9 थी जो अब करीब 54 प ीसदी है। आजादी के बाद चालू दशक ने कई इतिहास रचे। सच ही कहा गया है कि जैसे–जैसे लोगों में समपन्नता आती है वैसे–वैसे हमारी सोच भी बदली। हम पर्दा प्रथा का मुकाबला करने को तैयार है और अपने अधिकारों के प्रति भी सचेत हो गये हैं। गाँवों के विकास के साथ ही लोगों की सोच में भी प्रगतिशीलता आयी है। जहाँ एक तरप संयुक्त प्रगतिशील संगठन की अध्यक्ष सोनिया गांधी को बनाया गया। वहीं विभिन्न राज्यों में मुख्यमन्त्री पद पर पहले से ही महिलाओं को जिम्मेदारी मिली तो अन्य लोगों में भी यह विश्वास पैदा हुआ कि महिलायें चौका–बर्तन के अलावा अन्य जिम्मेदारी भी निभा सकती है पि र एक के बाद एक पद पर महिलाओं को जिम्मेदारी मिलने लगी। प्राथमिक विद्यनालयों में महिला शिक्षिकाओं की संख्या में करीब 65 प ीसदी से अधिक बतायी जा रही है। पहले स्थिति यह भी कि तमाम बालिकायें अल्पायु में ही बंधुआ मजदूर बन जाती थी। लेकिन अब ऐसा नहीं है बालिकायें स्कूल जा रही है और बड़ी होने पर अपने कैरियर का पै सला खुद कर रही है। जब इनके हाथ में किसी गाँव को बदलने की जिम्मेदारी आती है तो वे उसी तरह निभाती है जैसे अपने परिवार को संवारती है।

गुलामी की जंजीरों को तोड़ने के बाद देश के सामने कई चुनौतियाँ थी। गाँवों में संसाधनों का अभाव था। अशिक्षा, भुखमरी, बेरोजगारी की लम्बी प ौज थी। सबसे बड़ी समस्या शिक्षा का सबसे बुरा हाल था। बालिकाओं को लोग स्कूल भेजना नहीं पसन्द करते थे। देश आजाद होने के बाद पहली बार हुए सर्वे में यह बात सामने आई कि बालिका साक्षरता दर मात्र 8.9 प ीसदी थी। उच्च प्राथमिक स्तर पर बालिकाओं के स्कूल नामांकन की दर 4.6 प ीसदी थी लेकिन बदलते परिवेश में सब कुछ बदल गया है। आजादी के बाद महिलाओं को खुली हवा में न सिर्प सांस लेने की आजादी मिली

बल्कि अब तो वे पंचायतों का प्रतिनिधित्व कर देश व समाज में बदलाव का आन्दोलन चला रही हैं। हमारी सरकारें भी महिलाओं को आगे लाने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ रही है। पंचायतों में जहाँ महिलाओं को 50 प ीसदी आरक्षण देने की घोषणा कर दी गयी है वहीं विधानसभा एवं लोकसभा में भी महिलाओं को आरक्षण देने की पहल चल रही है। यह पहल अनायास ही नहीं हैं चूंकि अब तक हुए सर्वे और विभिन्न तरह की आयी रिपोर्टो में यह बात सामने आ चुकी है कि जिन स्थानों पर महिलाओं को प्रतिनिधित्व मिला वे काप ी कुशलता से अपने दायित्व का निर्वहन कर रही है। चूंकि शुरुआती दौर से ऐसी स्थिति बनी हुई थी कि महिलाओं को चहारदीवारी के अन्दर बन्द रखा गया, लेकिन अब उनमें जागरुकता आ गयी है। वे घर से बाहर निकलकर न सिर्प सामाजिक जिम्मेदारी निभा रही है बल्कि आर्थिक रुप से भी सु.ढ़ हो गयी है। अब राजनीतिक प्रशासन लेखन सहित ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहाँ महिलाओं की भागीदारी न हों।

शिक्षा आर्थिक एवं सामाजिक विकास की प्रथम कड़ी है जिसका मानव जीवन में सर्वोपरि स्थान है। शिक्षा के तकनीकी वर्ग के आधार पर नित नये–नये प्रयोग हो

रहे हैं तथा विकास कार्यक्रमों में उससे सहयोग प्राप्त हो रहा है। वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार जनपद में साक्षरता का प्रतिशत 33.0 रहा है। जिसमें 71.46 प्रतिशत पुरुष तथा 28.33 प्रतिशत स्त्रियाँ सम्मिलित हैं। साक्षरता का यह प्रतिशत मण्डल स्तर का 30.57 प्रतिशत रहा है।1

शिक्षा का मानवीय जीवन से अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। शिक्षा एक सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति का निर्धारण होता हैं शिक्षा अथवा उच्च शिक्षा की आकांक्षायें काप ी हद तक "व्यक्ति–विशेष" के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि से सम्बन्धित होती है। व्यक्ति की आकांक्षाओं एवं उनकी उपलब्धि में परिवार, समाज जैसे मूलभूत संस्था एवं इकाई का पर्याप्त योगदान होता है। एक उच्च शैक्षणिक एवं प्रतिष्ठित वातावरण में स्थिति वयक्ति की आकांक्षायें एवं क्रियाविधि

सामान्य रुप से निम्न स्तर के शैक्षणिक एवं सामाजिक प्रतिष्ठा वाले व्यक्ति की तुलना में काप ी वैधम्य होता है। आज के इस जटिल एवं आधुनिकीकरण की ओर उन्मुख समाज में उच्च शिक्षा की प्राप्ति में व्यक्ति के साथ अनेक कारकों का व्यापक प्रभाव परिलक्षित होता है।1

ऐतिहासिक परिवेश में शिक्षा–प्राप्ति एवं उद्देश्यों में काप ी साम्य रहा हैं। सामज के कुछ विशिष्ट वर्गों तक ही शिक्षा सीमित थी। तत्कालीन स्थितियों में ब्राह्मणों का शिक्षा एवं आध्यात्मक पर एकाधिकार था।2 कालान्तर में भी विश्व के प्रायः सभी राष्ट्रों में उच्च शिक्षा एवं मध्यम वर्गो तक ही केन्द्रित रही है। विद्वानों का मत है कि 19वीं शताब्दी के समय भी विश्व के आधुनिक समाजों एवं राष्ट्रों में उच्च शिक्षा कुछ लोगों लिये ही सीमित थी3 वस्तुतः शिक्षा मात्र ज्ञानार्जन के लिये नहीं है अपितु समाज में सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति तथा व्यक्तित्व के विकास के लिये भी

अति आवश्यक है। विद्वान् दार्शनिक 'प्लेटो' का मत है कि अगर शिक्षा का स्तर ऊँचा हो तो समाज में सुधार (रिप ार्म) सम्भव है।4 शिक्षा के द्वारा समाज एवं व्यक्ति के जीवन में आर्थिक उन्नति सम्भव होती है। विकासशील देशों के आर्थिक श्रेष्ठता के सन्दर्भ में यह पर्याप्त आवश्यक ज्ञान एवं कौशल प्रदत्त करती है। वस्तुतः शिक्षा के साथ गतिशीलता का पहलू जुड़ा हुआ है। एक ृष्टि से व्यक्ति की जीवन में उर्ध्वाकार गतिशीलता का प्रादुर्भाव करती है। परिणामतः समाज में विशेषज्ञों, दक्ष व्यक्तियों एवं बुद्धिजीवीयों का एक विशेष वर्ग निर्मित होता है।5 विद्वान् समाजवैज्ञानिक गोरे का विचार है कि आज का युवा वर्ग जिनमें विशेषतः छात्र होते हैं, व्यवसायों के अवसर की शैक्षणिक उपलब्धियों से सम्बद्धता के कारण शैक्षणिक एवं व्यावसायिक व्यवस्थाओं को अन्तःसम्बन्धित मानता है।6 सारांशतः हम कह सकते हैं कि उच्च शिक्षा से व्यावसायिक महत्वाकांक्षायें निश्चित होती है एवं व्यक्ति व्यवसाय–विशेष से सम्बन्ध हो जाता है।

इस प्रकार व्यक्ति की महत्त्वाकांक्षाओं के निर्धारण में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। परन्तु वहीं पर दूसरी ओर आर्थिक स्थिति, सामाजिक प्रस्थिति, प्रतिष्ठा एवं व्यवसाय विशेषज्ञता में दक्षता के द्वारा भी महत्त्वाकांक्षाओं का निर्धारण होता है। समाज में व्यक्ति की प्रतिष्ठा, आधिपत्य एवं लोकप्रियता के सन्दर्भ में आय एवं व्यवसाय का उल्लेखनीय स्थान है। आय के विभिन्न स्रोत, आर्थिक सम्पन्नता एवं प्रतिष्ठा के कारण व्यक्ति समाज में अपना अलग वर्ग एवं स्थान नियत करता है। मप ी एवं मारिस ने "साइटस" के द्वारा भी समाज में वर्ग–स्थिति एवं महत्त्वाकांक्षाओं के निर्धारण में इसकी भूमिका को स्वीकार किया है विभिन्न शोधों के आधार पर स्पष्ट हो चुका है कि व्यावसायिक एवं वर्ग–प्रस्थिति की महत्त्वाकांक्षाओं पैतृक पृष्ठभूमि (व्यवसायिक एवं वर्ग स्थिति) से भी निश्चित होती है।7 इस सन्दर्भ में ग्लापस एवं

हॉल ने उल्लेख किया है कि पुत्र के व्यावसायिक महत्त्वाकांक्षाओं पर पिता के व्यवसाय की स्थिति एवं वर्ग–प्रस्थिति का उल्लेखनीय प्रभाव दृष्टिगत होता है।8

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि व्यक्ति की शैक्षणिक आकांक्षाओं के निर्धारण में अनेक कारकों का सहकारी योगदान है। परिवर्तनोन्मुख समाज में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण उपादेयता के कारण समाज के अधिकांश सदस्य अपने को अत्यधिक शिक्षित होने की आकांक्षा रखते हैं।9 शिक्षा समाज में जटिल राजनैतिक प्रक्रियाओं को समझने एवं उनमें अर्थपूर्ण ढंग से सहभाग करने के ़ष्टिकोण से भी महत्त्वपूर्ण स्वीकार की गयी है। वस्तुतः यह एक ऐसा साधन है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने से सम्बन्धित राजनीतिक एवं सामाजिक प्रक्रियाओं, गतिविधियों का मन कर सकता है एवं उसकी अनुरुप अपने को समायोजित करने की चेष्टा करता है। शिक्षा राजनैतिक स्थिरता स्थापित करने के ़ष्टिकोण से भी महत्त्वपूर्ण मानी गयी है। रॉस (डेविस) का मत है कि अच्छे शिक्षण संस्थानों का परिणाम एक सम्पूर्ण एवं सुलभ पड़ोस की कल्पना मानी जा सकती है।"10 आज का युवा छात्र वर्ग अपने आदर्शों, मूल्यों एवं प्रतिमानों में सम्य । परिवर्तन एवं सुधार लाने में प्रयत्नशील है एवं वह परम्परागत पीढ़ियों से चली आ रही मान्यताओं, प्रथाओं, मूल्यों आदर्शों से विमुख होता जा रहा है। "अनुसूचित वर्ग के अभिवृत्तियों एवं आकांक्षाओं से उनके भौतिकवादी उपलब्धियों का संकेत मिलता है।"11

शिक्षा और जनसंचार के माध्यमों ने ग्रामीण भारत की सामाजिक व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन लाकर उसे आधुनिकीकरण के रास्ते पर आगे बढ़ाया। सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था में परिवर्तन लाने में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इससे एक शिक्षित वर्ग विकसित हुआ जो कि सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन के लिये बेहत उत्सुक था। इस एक परिवर्तन ने परम्परात्मक समाज के बन्धन तोड़कर उसे

आधुनिकीकरण की दौड़ में शामिल किया। शिक्षा के चलते समाज के गरीब कमजोर तबकों में भी अपने अधिकारों के प्रति जागरुकता बढ़ी। अधिकांश अक्षिक्षित ग्रामीण समाज के बीच रेडियो, टी.वी. और पि ल्मों ने परिवर्तन व सशक्तिकरण के उपकरण के रुप में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है तथा किताबों के बिना भी जानकारी और शिक्षा का एक माध्यम रचा है।

फैली हुई निरक्षरता के माहौल में लोकगीत, लोकनृत्य, कठपुतली इत्यादि ही शिक्षा और जानकारी देने के माध्यम के रुप में इस्तेमाल होते रहे किन्तु तकनीकी परिवर्तन के दौर के आने के पश्चात् सूचना, संचार, मनोरंजन और विचारों के आदान–प्रदान व प्रसार के लिये कई नये माध्यम सामने आये। रेडियों की पहुँच लगभग 99 प्रतिशत जनता तक और टी.वी. लगभग 60 प्रतिशत जनता तक पहुँच चुका है। दोनों ही क्षेत्रीय भाषाओं में भी लोगों तक पहुँच रहे हैं। अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में चाय की दुकाने चर्चाओं का केन्द्र स्थल हैं जहाँ मिल बैठकर रेडियों और टी.वी. से मिली सूचनाओं का आदान–प्रदान और बहस करते हैं। यहाँ बीज, खाद, कीटनाशकों व खेती की उपज से लेकर नयी–नयी तकनीक और रहन–सहन सभी पर खासकर चर्चा होती है। आधुनिकता इन माध्यमों से दूरदराज के गाँवों तक पहुँच रही है। विस्तृत टी.वी. स्कूली शिक्षा और खेती में उन्नत तकनीक के प्रयोग के लिये विशेष सहायक सिद्ध हो रहा है। जहाँ एक ओर इन आधुनिक संसाधनों के प्रयोग से विकास का रास्ता खुला है वही अधधार्मिक विश्वासों और पौराणिकता से धर्मान्धता व अन्य विकास भी जन्म ले रहे हैं। वेशभूषा, भाषा–शैली, रहन–सहन, सामाजिक मूल्यों सभी में परिवर्तन दिखाई दे रहा है। चलते–पि रते सिनेमाघर, वीडियो इत्यादि अब अधिकांश गाँवों में दिखाई देने लगे है। आज इस बात की

कल्पना की जा सकती है कि वास्तव में छोटे–बड़े प्रौद्यनोगिक परिवर्तनों ने नये दौर में किस प्रकार सामाजिक क्रान्ति को जन्म दिया है।

समाज के सदस्य के रुप में या सामाजिक प्राणी के रुप में व्यक्ति द्वारा सामाजिक सन्दर्भ में किया गया कार्य ही सामाजिक क्रिया है। प्रत्येक सामाजिक क्रिया का कोई न कोई कारण अवश्य ही होता है। सामाजिक क्रिया कोई चमत्कार या जादुई अवधारणा नहीं है। यह तो सामाजिक घटना है और प्रत्येक सामाजिक घटना का एक कारण होता है और यही कारण उस क्रिया की प्रेरणा शक्ति सामाजिक क्रियाओं का तात्पर्य व्यक्ति के उन क्रिया–कलापों से है जो किसी लक्ष्य या उद्देश्य से उन्मेषित

होते है।12

शैक्षणिक स्तर

शिक्षा व्यक्ति के सामाजिक स्तर के निर्धारण में एक महत्त्वपूर्ण कारक है। शिक्षा जहाँ सामाजिक दायित्वों के सम्य । सम्पादन में योगदान देती है वही व्यक्ति के वर्ग तथा अभिरुचि को भी प्रकट करती है। यह प्रस्थिति अर्जन का भी आधार है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति कुछ विशेष योग्यता, कुशलता एवं क्षमता का विकास करता है जो उसके भावी व्यावसायिक जीवन को सप ल बनाने में सक्रिय रुप से योगदान प्रदान करता है। व्यावसायिक गतिशीलता दिशा और प्रकृति का निर्धारण शिक्षा के द्वारा ही होता है। आधुनिकीकरण के सन्दर्भ में शिक्षा की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। शिक्षा अन्धविश्वास रुढ़िवादिता एवं संकीर्णता का निवारण करके व्यक्ति को आधुनिकता की ओर अग्रसर करता है। विवेकशीलता, गतिशीलता, सहिष्णुता आदि आधुनिकता के लक्षण शिक्षा के माध्यम से ही विकसित होते हैं शिक्षा के

माध्यम से समस्याओं के समाधान की दृष्टि प्राप्त करता है। समाज के विकास स्थायित्व और निरन्तरता के लिये शिक्षा का विशेष महत्त्व है।

सामाजिक सहभागिता के सन्दर्भ में शिक्षा का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। अशिक्षित व्यक्ति के सामाजिक सम्पर्क की परिधि सीमित होती है। वह अपने परिवार, नातेदारी, सम्बन्ध, जातिगत सम्बन्ध या निवास क्षेत्र के अन्तर्गत ही सीमित स्तर पर अन्य व्यक्तियों के साथ अन्तःक्रिया कर पाता है। इसके विपरीत व्यक्ति के आध्यात्मिक एवं नैतिक विकास में शिक्षा का सर्वोपरि हाथ होता है। एक शिक्षित व्यक्ति परिवार, समाज और देश के निर्माण में अपनी अहम भूमिका निभा सकता है।

सारणी संख्या 5.1

उत्तरदाताओं के पारिवारिक सदस्यों का शैक्षणिक स्तर

क्र.सं.	शैक्षणिक स्तर	उत्तरदाताओं की संख्या			कुल प्रतिशत
		पुरुष	स्त्री	योग	
1.	अशिक्षित	25	39	64	16.00
2.	प्राथमिक	33	25	58	14.50
3.	हाईस्कूल	59	30	89	22.50
4.	इण्टरमीडिएट	31	35	66	16.50
5.	स्नातक	40	30	70	17.50
6.	प्रौद्यनोगिकी	20	13	33	8.25

7.	अन्य	10	10	20	5.00
	योग	218	182	400	100.00

उपरोक्त सारणी संख्या 5.1 से स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं में सम्मिलित समस्त उत्तरदाताओं के पारिवारिक सदस्यों की शैक्षिक स्थिति का आंकलन किया गया है। जिसमें 218 पुरुष और 182 महिलाओं को निदर्श के रुप में लिया गया है। जिसमें 218 पुरुष और 182 स्त्रियों में 39 स्त्रियाँ अशिक्षित है जो कि कुल का 9.75 प्रतिशत है। 35 इण्टरमीडिएट पास की है जो कि कुल का 8.75 प्रतिशत है। सबसे कम प्रौद्यनोगिकी माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने वाली स्त्रियों की संख्या मात्र 3.25 प्रतिशत है। पुरुषों में अशिक्षितों की संख्या 25 है जो सम्पूर्ण का 6.25 प्रतिशत है। सर्वाधिक संख्या हाईस्कूल पास की है जो कि 59 है जो सम्पूर्ण का 14.75 प्रतिशत हैं। सबसे कम संख्या 20 जो 5.00 प्रतिशत है, प्रौद्यनोगिकी विषयों की शिक्षा का है, उसके पश्चात् स्नातक पास महिलाओं की संख्या 30 है जो कुल 7.50 प्रतिशत है। पुरुषों की संख्या 40 (10.00 प्रतिशत) हैं। प्राथमिक शिक्षा ग्रहण करने वाली महिलाओं की संख्या 25 (6.25 प्रतिशत) पुरुषों की संख्या 33 (8.25 प्रतिशत) है। उत्तरदाताओं की शैक्षिक पृष्ठभूमि से यह ज्ञात होता है कि शिक्षा के प्रति जागरुक है। अतः अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं में लगभग 35.75 प्रतिशत महिलाएँ शिक्षित है और लगभग 48.25 प्रतिशत पुरुष शिक्षित है। सामाजिक सहभागिता को महत्त्वपूर्ण आधार प्रदान करने के लिये शिक्षित होना आवश्यक होता है। अतः यह कहा जा सकता है कि उत्तरदाताओं के पारिवारिक सदस्यों में भी शिक्षा के प्रति जागरुकता बढ़ी है।

उत्तरदाताओं का शैक्षिक स्तर

शिक्षा आधुनिक समाज में व्यक्ति की सामाजिक स्थिति का निर्धारण का एक महत्त्वपूर्ण आधार है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति कुछ विशेष योग्यता, कुशलता एवं क्षमता का विकास करता है, जो उसके भावी व्यावसायिक जीवन को सप ल बनाने में सक्रिय रुप से योगदान प्रदान करता है। व्यावसायिक गतिशीलता के सन्दर्भ में शिक्षा की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। शिक्षा अन्धविश्वास, रुढ़िवादिता एवं संकीर्णता का निवारण करके व्यक्ति को आधुनिकता की ओर अग्रसर करता है। यह प्रस्थिति अर्जन का भी आधार है। शिक्षा के माध्यम से समस्याओं के समाधान की दृष्टि प्राप्त होती है। समाज के विकास, स्थायित्व एवं निरन्तरता के लिये शिक्षा का विशेष महत्त्व है। व्यक्ति के आध्यात्मिक एवं नैतिक विकास में शिक्षा का सर्वोपरि हाथ होता है।

सामाजिक सहभागिता के सन्दर्भ में शिक्षा का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। अशिक्षित व्यक्ति के सामाजिक सम्पर्क की परिधि सीमित होती है। वह अपने परिवार नातेदारी सम्बन्ध, जातिगत सम्बन्ध अथवा निवास क्षेत्र के सीमित दायरे के अन्तर्गत ही अन्य व्यक्तियों के साथ सम्पर्क कर पाता है। इसके ठीक विपरीत शिक्षित व्यक्ति के सामाजिक सहभागिता की परिधि व्यापक होती है। उसके सम्बन्ध एवं सम्पर्क प्राथमिक संस्थाओं के अतिरिक्त समाज के द्वितीयक समूह एवं संस्थाओं तक विस्तृत हेाते हैं। शिक्षित व्यक्ति के सोच का दायरा भी अत्यन्त विस्तृत होता है, वह स्वयं के बारे में सोचने से पहले अपने समाज के बारे में अधिक सोचता है। वह अपने शैक्षणिक योग्यता बाह्य ज्ञान एवं सूचना सम्पर्क के वृहद साधनों से अधिक प्रभावित होने के कारण अपेक्षाकृत अधिक व्यापक स्तर पर सामाजिक बन्धनों का निर्माण करता है। सामाजिक जीवन में उसके सहभागिता की प्रकृति भी सामान्यतः अधिक

विस्तृत और गहन होती है। अतः शिक्षा को सामाजिक सहभागिता का एक महत्त्वपूर्ण आधार मानकर उत्तरदाताओं की शैक्षणिक स्तर की विवेचना आवश्यक है।

सारणी संख्या 5.2

उत्तरदाताओं की शैक्षणिक स्थिति

क्र.सं.	शिक्षा का स्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	अशिक्षित	74	18.50
2.	साक्षर	86	21.50
3.	प्राथमिक	62	15.50
4.	माध्यमिक शिक्षा	82	20.50
5.	स्नातक	45	11.25
6.	स्नातकोत्तर	26	6.50
7.	प्राविधिक शिक्षा	25	6.25
	योग	400	100.00

सारणी संख्या 5.2 के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि वर्तमान निदर्शन में सम्मिलित 18.50 प्रतिशत उत्तरदाता अशिक्षित हैं। 21.50 प्रतिशत उत्तरदाता साक्षर हैं जो कि केवल अपना नाम या हस्ताक्षर कर पाते हैं। 15.50 प्रतिशत उत्तरदाता प्राथमिक स्तर की शिक्षा प्राप्त की है, जिसमें कक्षा 8 या उससे कम की शिक्षा प्राप्त की है। 20.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्राप्त की है जिसमें

हाईस्कूल से लेकर इण्टर तक की शिक्षा सम्मिलित है। 11.25 प्रशित उत्तरदाताओं ने स्नातक स्तर की शिक्षा प्राप्त की है तथा 6.50 प्रतिशत ही परास्नातक स्तर की शिक्षा प्राप्त की है जो कि उच्च शिक्षित हैं इसके अतिरिक्त 6.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने प्राविधिक शिक्षा भी ग्रहण की है। अतः स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं में अधिकतर शिक्षित है। उत्तरदाताओं में सम्मिलित कुल 400 उत्तरदाताओं में से मात्र 74 उत्तरदाता जो कि कुल का मात्र 18.50 प्रतिशत ही अशिक्षित है। सबसे अधिक प्रतिशत साक्षर उत्तरदाताओं का है जो कि सम्पूर्ण का 21.50 प्रतिशत है। उत्तरदाताओं की यह शैक्षणिक स्थिति उनके सामाजिक सहभागिता का महत्त्वपूर्ण आधार है।

उपर्युक्त सारणी के आधार पर तथा मौखिक साक्षात्कार से यह निष्कर्ष निकलता है कि स्वतन्त्रता के पश्चात् शिक्षा के प्रति लोगों में चेतना जागृत हुई है, क्योंकि जिन 400 लोगों का अध्ययन किया गया है उनमें से लगभग 81.50 प्रतिशत उत्तरदाता साक्षर है। अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति के अन्दर परिवार, समाज एवं देश के प्रति अपने कर्तव्यों एवं उसके निर्वहन की भावना पनपती है, शिक्षा के माध्यम से अंधेरे को उजाले में बदला जा सकता है और इसी को आज के परिवेश ने करके दिखा दिया कि परतन्त्रता की बेड़ियों से किस तरह निकलकर स्वतन्त्रता में परिवर्तित किया जा सकता है, शिक्षा व्यक्ति के अन्दर ़ढ़ इच्छाशक्ति एवं संकल्पना को बलवती बनाती है, कोई कारण अवश्य ही होता है। सामाजिक क्रिया कोई चमत्कार या जादुई अवधारणा नहीं है। यह तो सामाजिक घटना है और प्रत्येक सामाजिक घटना का एक कारण होता है और यही कारण उस क्रिया की प्रेरणा है या प्रेरक शक्ति। सामाजिक क्रियाओं का तात्पर्य व्यक्ति के उन क्रिया–कलापों से है जो किसी लक्ष्य या उद्देश्य से उन्मेषित होते हैं।12

शासन का कोई भी स्वरुप चाहे वह लोकतान्त्रिक हो या अलोकतान्त्रिक, लोकमत किसी न किसी रुप में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यह प्रशासन के कुशल प्रहरी का कार्य करता है तथा अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा, स्वस्थ लोकमत पर ही निर्भर करती है लोकमत की अभिव्यक्ति के महत्त्वपूर्ण साधनों में रेडियो, सिनेमा, राजनीतिक दल, सार्वजनिक सभाएँ, दूरदर्शन, निर्वाचन साहित्य तथा समाचार पत्र आदि है स्वस्थ, निष्पक्ष एवं न्यायपूर्ण समाचार–पत्र, लोकमत के सजग प्रहरी तथा प्रजातन्त्र के धर्मग्रन्थ हैं। इनके माध्यम से ही राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनैतिक सन्दर्भों में हो रहे परिवर्तनों एवं वैचारिक आयामों का ज्ञान अच्छी तरह होता है। पारम्परिक एवं स्थानीय बातों में उलझे रहने की रुढ़िवादी प्रवृत्ति का समाचार–पत्रों के माध्यम से निराकरण होता है, जो व्यक्ति के चिन्तन को व्यापक आयाम देने के साथ ही विविध ज्ञान में वृद्धि करते है। इनके सस्ते होने एवं सर्वसुलभ होने के साथ ही हर जगह पहुँचाये जा सकने की व्यवस्था से भी समाचार पत्रों का अधिकाधिक प्रचार–प्रसार हुआ है। समाचार–पत्रों के पाठन की आदत व्यक्ति को न केवल आधुनिकता के निकट जाती हैं बल्कि दकियानूसी व अविवेकपूर्ण विचारों को दूर करने में सक्षम होती है।

प्रश्न 1 : शिक्षा के प्रति जागरुकता

सारणी संख्या 5.3

ग्राम	हाँ	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत	योग
मझवाँकला	66	66.00	34	34.00	100
मुजार	63	63.00	37	37.00	100

छंगापुर 67 67.00 33 33.00 100

सरकी 56 56.00 44 44.00 100

योग 252 63.00 148 37.00 400

उपर्युक्त सारणी संख्या 5.3 में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या वे शिक्षा के प्रति जागरुक हैं? के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम मझवाँकला में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 66 (66.0 प्रतिशत) का उत्तर हाँ में है तथा 34 (34.0 प्रतिशत) का उत्तर नहीं में रहा। मुजार में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 63 (63.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिया और 37 (37.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया जबकि छंगापुर में 67 (67.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिये और 33 (33.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा ग्राम सरकी में 100 उत्तरदाताओं में से 56 (56.0 प्रतिशत) ने हाँ में तथा 44 (44.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया।

अतः सारणी के अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है 252 (63.0 प्रतिशत) उत्तरदाता शिक्षा के प्रति जागरुक है जबकि 148 (37.0 प्रतिशत) उत्तरदाता शिक्षा के प्रति जागरुक नहीं है।

प्रश्न 2 : क्या अनुसूचित जाति के लोगों में शिक्षा के प्रति जागरुकता बढ़ी है?

सारणी संख्या 5.4

ग्राम हाँ प्रतिशत नहीं प्रतिशत योग

मझवाँकला 68 68.00 32 32.00 100

मुजार 72 72.00 28 28.00 100

छंगापुर 65 65.00 35 35.00 100

सरकी 81 81.00 19 19.00 100

योग 286 71.50 114 28.50 400

सारणी संख्या 5.4 में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या अनुसूचित जाति के लोगों में शिक्षा के प्रति जागरुकता बढ़ी हैं? के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम मझवाँकला में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 68 (68.0 प्रतिशत) का उत्तर हाँ में तथा 32 (32.0 प्रतिशत) का उत्तर नकारात्मक रहा। ग्राम मुजार में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 72 (72.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिया और 28 (28.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिया जबकि छंगापुर में 65 (65.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिये और 35 (35.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा ग्राम सरकी में 100 उत्तरदाताओं में से 81 (81.0 प्रतिशत) ने हाँ में तथा 19 (19.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया।

अतः सारणी के अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है 286 (71.50 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने बताया कि गाँवों में अनुसूचित जातियों में शिक्षा के प्रति जागरुकता बढ़ी है।

प्रश्न 3 : क्या लड़कियों की शिक्षा को आप उचित मानते है?

सारणी संख्या 5.5

ग्राम हाँ प्रतिशत नहीं प्रतिशत योग

मझवाँकला 67 67.00 33 33.00 100

मुजार 64 64.00 36 36.00 100

छंगापुर 66 66.00 34 34.00 100

सरकी 59 59.00 41 41.00 100

योग 256 64.00 144 36.00 400

सारणी संख्या 5.5 के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या लड़कियों की शिक्षा को आप उचित मानते हैं? के क्रम में ग्राम मझवाँकला में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 67 (67.0 प्रतिशत) का उत्तर हाँ में तथा 33 (33.0 प्रतिशत) का उत्तर नकारात्मक रहा। ग्राम मुजार में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 64 (64.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिया और 36 (36.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया जबकि छंगापुर में 66 (66.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिये और 34 (34.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा ग्राम सरकी में 100 उत्तरदाताओं में से 59 (59.0 प्रतिशत) ने हाँ में तथा 41 (41.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया।

उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से यह कहा जा सकता है कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने लड़कियों की शिक्षा को उचित माना हैं।

प्रश्न 4 : क्या लड़कों के समान लड़कियों को भी शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए?

सारणी संख्या 5.6

ग्राम हाँ प्रतिशत नहीं प्रतिशत योग

मझवाँकला 53 53.00 47 47.00 100

मुजार 51 51.00 49 49.00 100

छंगापुर 55 55.00 45 45.00 100

सरकी 56 56.00 44 44.00 100

योग 215 53.75 185 46.25 400

सारणी संख्या 5.6 के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या लड़कों के समान लड़कियों को भी शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए? के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम मझवाँकला में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 53 (53.0 प्रतिशत) का उत्तर हाँ में तथा 47 (47.0 प्रतिशत) का उत्तर नकारात्मक रहा। ग्राम मुजार में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 51 (51.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिया और 49 (49.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया जबकि छंगापुर में 55 (55.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिये और 45 (45.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा ग्राम सरकी में 100 उत्तरदाताओं में से 56 (56.0 प्रतिशत) ने हाँ में तथा 44 (44.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया।

उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से ज्ञात होता है कि इस प्रकार सम्पूर्ण 400 उत्तरदाताओं में 215 (53.75 प्रतिशत) उत्तरदाता यह मानते हैं कि लड़कों के समान लड़कियों को भी शिक्षा प्रदान की जानी चाहिये जबकि 185 (46.25 प्रतिशत) उत्तरदाता ऐसा नहीं मानते हैं।

प्रश्न 5 : क्या अनुसूचित जाति में लड़कियों की शिक्षा का प्रतिशत बढ़ा है?

सारणी संख्या 5.7

ग्राम हाँ प्रतिशत नहीं प्रतिशत योग

मझवाँकला 68 68.00 32 32.00 100

मुजार 63 63.00 37 37.00 100

छंगापुर 43 43.00 57 57.00 100

सरकी 61 61.00 39 39.00 100

योग 235 58.75 165 41.25 400

सारणी संख्या 5.7 के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या अनुसूचित जाति में लड़कियों की शिक्षा का प्रतिशत बढ़ा है? के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम मझवाँकला में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 68 (68.0 प्रतिशत) का उत्तर हाँ में तथा 32 (32.0 प्रतिशत) का उत्तर नकारात्मक रहा। ग्राम मुजार में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 63 (63.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिया और 37 (37.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया जबकि छंगापुर में 43 (43.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिये और 57 (57.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा ग्राम सरकी में 100 उत्तरदाताओं में से 61 (61.0 प्रतिशत) ने हाँ में तथा 39 (39.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया।

अतः कहा जा सकता है कि अनुसूचित जाति में शिक्षा के प्रति अभिरुचि बढ़ी है। आज प्रत्येक व्यक्ति लड़कों के साथ लड़कियों की शिक्षा पर विशेष बल दे रहा है।

प्रश्न 6 : क्या आप ऐसा मानते हैं कि शिक्षित लड़कियाँ परिवार को आगे बढ़ाने में मददगार साबित होती हैं?

सारणी संख्या 5.8

ग्राम हाँ प्रतिशत नहीं प्रतिशत योग

मझवाँकला 54 54.00 46 46.00 100

मुजार 56 56.00 44 44.00 100

छंगापुर 49 49.00 51 51.00 100

सरकी 56 56.00 44 44.00 100

योग 215 53.75 185 46.25 400

सारणी संख्या 5.8 के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या आप ऐसा मानते हैं कि शिक्षित लड़कियाँ परिवार को आगे बढ़ाने में मददगार साबित होती हैं? के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम मझवाँकला में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 54 (54.0 प्रतिशत) का उत्तर हाँ में तथा 46 (46.0 प्रतिशत) का उत्तर नकारात्मक रहा। ग्राम मुजार में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 56 (63.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिया और 44 (44.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया जबकि छंगापुर में 49 (49.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिये और 51 (51.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा ग्राम सरकी में 100 उत्तरदाताओं में से 56 (56.0 प्रतिशत) ने हाँ में तथा 44 (44.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया।

उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से ज्ञात होता है कि शिक्षित लड़कियाँ परिवार को आगे बढ़ाने में मददगार साबित होती है क्योंकि एक शिक्षित स्त्री परिवार को और एक परिवार समाज को सही दिशा प्रदान कर सकता है।

प्रश्न 7 : क्या प्रौढ़ महिलाओं को भी शिक्षित किया जाना चाहिये?

सारणी संख्या 5.9

ग्राम हाँ प्रतिशत नहीं प्रतिशत योग

मझवाँकला 65 65.00 35 35.00 100

मुजार 73 73.00 27 27.00 100

छंगापुर 69 69.00 31 31.00 100

सरकी 67 67.00 33 33.00 100

योग 274 68.50 126 31.50 400

सारणी संख्या 5.9 के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या प्रौढ़ महिलाओं को भी शिक्षित किया जाना चाहिये? के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम मझवाँकला में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 65 (65.0 प्रतिशत) का उत्तर हाँ में तथा 35 (35.0 प्रतिशत) का उत्तर नकारात्मक रहा। ग्राम मुजार में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 73 (73.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिया और 27 (27.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया जबकि छंगापुर में 69 (69.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिये और 31 (31.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा ग्राम सरकी में 100 उत्तरदाताओं में से 67 (67.0 प्रतिशत) ने हाँ में तथा 33 (33.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया।

उपर्युक्त सारणी के अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण उत्तरदाताओं में अधिकांश ने स्वीकार किया है कि प्रौढ़ महिलाओं को भी शिक्षित किया जाना चाहिये, जिससे उनके आत्म विश्वास में वृद्धि हो।

प्रश्न 8 : क्या महिलाओं की आत्मनिर्भरता के लिये शिक्षा आवश्यक है?

सारणी संख्या 5.10

ग्राम हाँ प्रतिशत नहीं प्रतिशत योग

मझवाँकला	64	64.00	36	36.00	100
मुजार	62	62.00	38	38.00	100
छंगापुर	59	59.00	41	41.00	100
सरकी	56	56.00	44	44.00	100
योग	241	60.25	159	39.75	400

सारणी संख्या 5.10 के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या महिलाओं की आत्मनिर्भरता के लिये शिक्षा आवश्यक है? के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम मझवाँकला में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 64 (64.0 प्रतिशत) का उत्तर हाँ में तथा 36 (36.0 प्रतिशत) का उत्तर नकारात्मक रहा। ग्राम मुजार में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 62 (62.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिया और 38 (38.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया जबकि छंगापुर में 59 (59.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिये और 41 (41.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा ग्राम सरकी में 100 उत्तरदाताओं में से 56 (56.0 प्रतिशत) ने हाँ में तथा 44 (44.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया।

उपर्युक्त सारणी में 241 (60.25 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने माना है कि महिलाओं की आत्मनिर्भरता के लिये शिक्षा आवश्यक है जबकि 159 (39.75 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने माना है कि महिलाओं की आत्मनिर्भरता के लिये शिक्षा आवश्यक नहीं है।

प्रश्न 9 : क्या शिक्षित महिलाओं से समाज में गतिशीलता बढ़ी है?

सारणी संख्या 5.11

ग्राम	हाँ	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत	योग
मझवाँकला	69	69.00	31	31.00	100
मुजार	73	73.00	27	27.00	100
छंगापुर	68	68.00	32	32.00	100
सरकी	64	64.00	36	36.00	100
योग	274	68.50	126	31.50	400

सारणी संख्या 5.11 के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या शिक्षित महिलाओं से समाज को गति मिल रही है? के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम मझवाँकला में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 69 (69.0 प्रतिशत) का उत्तर हाँ में तथा 31 (31.0 प्रतिशत) का उत्तर नकारात्मक रहा। ग्राम मुजार में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 73 (73.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिया और 27 (27.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया जबकि छंगापुर में 68 (68.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिये और 32 (32.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा ग्राम सरकी में 100 उत्तरदाताओं में से 64 (64.0 प्रतिशत) ने हाँ में तथा 36 (36.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया।

उपर्युक्त सारणी में 274 (68.50 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने माना है कि शिक्षित महिलाओं से समाज को गति मिल रही है।

प्रश्न 10 : क्या महिलाओं की शैक्षिक स्वतन्त्रता में पुरुष वर्ग सहयोग कर रहे हैं?

सारणी संख्या 5.12

ग्राम	हाँ	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत	योग
मझवाँकला	57	57.00	43	43.00	100
मुजार	59	59.00	41	41.00	100
छंगापुर	53	53.00	47	47.00	100
सरकी	56	56.00	44	44.00	100
योग	225	56.25	175	43.75	400

सारणी संख्या 5.12 के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या महिलाओं की शैक्षिक स्वतन्त्रता में पुरुष वर्ग सहयोग कर रहे हैं? के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम मझवाँकला में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 57 (57.0 प्रतिशत) का उत्तर हाँ में तथा 43 (43.0 प्रतिशत) का उत्तर नकारात्मक रहा। ग्राम मुजार में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 59 (59.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिया और 41 (41.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया जबकि छंगापुर में 53 (53.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिये और 47 (47.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा ग्राम सरकी में 100 उत्तरदाताओं में से 56 (56.0 प्रतिशत) ने हाँ में तथा 44 (44.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया।

उपर्युक्त सारणी में 225 (56.25 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने माना है कि महिलाओं की शैक्षिक स्वतन्त्रता में पुरुष वर्ग सहयोग कर रहे हैं जबकि 175 (43.75 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने इसे स्वीकार नहीं किया है।

प्रश्न 11 : क्या आप महिलाओं की उच्च शिक्षा के पश्चात् ही विवाह के पक्ष में हैं?

सारणी संख्या 5.13

ग्राम	हाँ	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत	योग
मझवाँकला	55	55.00	45	45.00	100
मुजार	51	51.00	49	49.00	100
छंगापुर	56	56.00	44	44.00	100
सरकी	58	58.00	42	42.00	100
योग	220	55.00	180	45.00	400

सारणी संख्या 5.13 के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या आप महिलाओं की उच्च शिक्षा के पश्चात् ही विवाह के पक्ष में हैं? के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम मझवाँकला में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 55 (55.0 प्रतिशत) का उत्तर हाँ में तथा 45 (45.0 प्रतिशत) का उत्तर नकारात्मक रहा। ग्राम मुजार में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 51 (51.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिया और 49 (49.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया जबकि छंगापुर में 56 (56.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिये और 44 (44.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा ग्राम सरकी में 100 उत्तरदाताओं में से 58 (58.0 प्रतिशत) ने हाँ में तथा 42 (42.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया।

उपर्युक्त सारणी में 220 (55.0 प्रतिशत) उत्तरदाता महिलाओं की उच्च शिक्षा के पश्चात् ही विवाह के पक्ष में हैं जबकि 180 (45.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का विचार नकारात्मक रहा। उपर्युक्त अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि उच्च शिक्षा के पश्चात् विवाह का विचार बाल विवाह में कमी ला सकता है।

प्रश्न 12 : क्या शिक्षित महिलाओं से समाज को नई दिशा मिल रही हैं?

सारणी संख्या 5.14

ग्राम	हाँ	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत	योग
मझवाँकला	45	45.00	55	55.00	100
मुजार	56	56.00	44	44.00	100
छंगापुर	43	43.00	57	57.00	100
सरकी	55	55.00	45	45.00	100
योग	199	49.75	201	50.25	400

सारणी संख्या 5.14 के अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या शिक्षित महिलाओं से समाज को नई दिशा मिल रही हैं? के क्रम में ग्राम परिवर्त्य के आधार पर ग्राम मझवाँकला में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 45 (45.0 प्रतिशत) का उत्तर हाँ में तथा 55 (55.0 प्रतिशत) का उत्तर नकारात्मक रहा। ग्राम मुजार में सम्पूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 56 (56.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिया और 44 (44.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया जबकि छंगापुर में 43 (43.0 प्रतिशत) ने हाँ में उत्तर दिये और 57 (57.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिये तथा ग्राम सरकी में 100 उत्तरदाताओं में से 55 (55.0 प्रतिशत) ने हाँ में तथा 45 (45.0 प्रतिशत) ने नहीं में उत्तर दिया।

उपर्युक्त सारणी के अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि 199 (49.75 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने माना है कि शिक्षित महिलाओं से समाज को नई दिशा मिल रही है जबकि 201 (50.25 प्रतिशत) उत्तरदाता ऐसा नहीं मानते।

प्रश्न 13 : क्या आप समाचार–पत्र नियमित पढ़ते हैं?

सारणी संख्या 5.15

क्र.सं.	समाचार पत्र पढ़ने की आवृत्ति	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	214	53.50
2.	नहीं	146	36.50
3.	कभी–कभी	40	10.00
	योग	400	100.00

सारणी संख्या 5.15 में संचार माध्यमों से समाचार पत्र के प्रति जागरुकता की जानकारी ली गयी। इसके अनुसार लगभग 53.5 प्रतिशत उत्तरदाता नियमित रुप से समाचार–पत्र पढ़ते हैं। 36.5 प्रतिशत उत्तरदाता पत्र नहीं पढ़ते हैं जबकि 10 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी समाचार–पत्र पढ़ते हैं। विद्यनमान परिस्थितियों में लोगों के बहुत बड़े प्रतिशत द्वारा समाचार–पत्रों का पाठन एक शुभ संकेत है। प्रौढ़ शिक्षा एवं सरकार के अन्य अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों की ष्टि से यह उपयोगी है जो पढ़ने की स्थिति में नहीं है वे पढ़ने में सक्षम हो सकें तथा समाचार पत्रों के साथ–साथ ग्राम पंचायत के अन्य अवश्यक प्रपत्रों को भी पढ़ने में समर्थ हो सकें।

अतः उपरोक्त आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अधिकांश उत्तरदाता दैनिक समाचार–पत्र पढ़ते हैं। इससे न केवल आधुनिक संचार साधनों के प्रति नेतृत्व की जागरुकता प्रकट होती है, अपितु समकालीन विश्व में उथल–पुथल व सभी प्रकार की हलचलों से अपने आपको जागरुक बनाये रख सकते हैं।

उत्तरदाताओं में रेडियो सुनने की प्रवृत्ति

आधुनिक संचार साधनों में रेडियो का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इससे एक ओर देश विदेश तक खबर पहुँचती है तो दूसरी ओर विविध रुपों में मनोरंजन भी होता है। भारतीय समाज में रेडियो और दूरदर्शन दो ऐसे माध्यम हैं, जिन्होंने आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को जागृत किया है। खाली क्षणों को बिताने तथा अकेलेपन की यातना से मुक्ति और मनोरंजन का एक प्रमुख साधन रेडियों, व्यक्ति के मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डालकर उसके चिन्तन, व्यवहार एवं रहन–सहन को प्रभावित करता है। रेडियो सुनने की नियमितता सर्वथा आधुनिक प्रवृत्तियों को व्यक्त करती है, इसमें अनियमितता संक्रमणशील स्थिति को सूचित करती है। लेकिन रेडियो एकदम नहीं सुनना सर्वथा रुढ़िवादी और पारम्परिक माना जा सकता है जैसा कि प्रायः नहीं प्राप्त होता है।

प्रश्न 14 : क्या आप रेडियों सुनते हैं?

सारणी संख्या 5.16

क्र.सं.	रेडियो सुनने की आवृत्ति	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	313	78.25
3.	नहीं	87	21.75
	योग	400	100.00

सारणी संख्या 5.16 में स्पष्ट होता है कि लगभग 78.25 प्रतिशत उत्तरदाता रेडियों सुनते हैं। केवल मात्र 21.75 प्रतिशत ने इससे इंकार किया है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि रेडियों सुनना उनकी आधुनिकता की ओर उन्मुख अभिवृत्तियों को

व्यक्त करता है। रेडियों की लोकप्रियता में यद्यनपि दूरदर्शन के आने से कमी आयी है लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी रेडियों का अपना महत्त्व है।

उत्तरदाताओं में टेलीविजन देखने की प्रवृत्ति

वर्तमान युग में दूरदर्शन मनोरंजन का साधन ही नहीं, अपितु गम्भीरता से लिया जाने वाला कला का एक प्रकार भी है। समसामयिक आकांक्षाओं, चिन्ताओं एवं अन्य विभिनन प्रवृत्तियों को अभिव्यक्त करने का यह प्रमुख माध्यम है। दूरदर्शन आधुनिक संचार साधनों में एक ऐसा प्रभावशाली माध्यम है जो आज विश्व को मनोवैज्ञानिक रुप से क्रमशः छोटा बनाता जा रहा हैं आज के युग में दूरदर्शन मनोरंजन एवं संचार साधन ही नहीं वरन शैक्षणिक ़ष्टि से एक उपयोगी माध्यम भी है। यह खाली समय को व्यतीत करने का साधन होने के अतिरिक्त व्यक्ति को बाह्य संसार से परिचित कराने का साधन भी है।

राजनीति और दूरदर्शन का जहाँ तक प्रश्न है, राजनीति का सम्बन्ध किसी भी देश में उस देश की आम जनता से जाता है। राजनीति में आम जीवन के प्रश्नों पर बहस होती है और आम जीवन की समस्याओं का हल निकालने की कोशिश होती है। राजनीति में विचारधाराओं का संघर्ष होता है और यह भी कोई आवश्यक नहीं कि प्रत्येक व्यक्ति एक–दूसरे के विचारों से सहमत हो। राजनीति में प्रत्येक व्यक्ति का अपना अलग मार्ग होता है और अलग विचार होते है। दूरदर्शन का सम्बन्ध हमारे आम जीवन से होता है। वह मनोरंजन के साथ–साथ गहन राजनीतिक समझ पैदा करने में सक्षम होता है।

प्रश्न 15 : क्या आप दूरदर्शन के कार्यक्रम देखते हैं?

सारणी संख्या 5.17

क्र.सं.	दूरदर्शन के कार्यक्रम देखने की आवृत्तिआवृत्ति		प्रतिशत
1.	हाँ	301	75.25
3.	नहीं	99	24.75
	योग	400	100.00

सारणी संख्या 5.17 में संचार माध्यमों में टेलीविजन के प्रति जागरुकता सम्बन्धी जानकारी ली गयी है। लगभग 75.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया है कि वे टेलीविजन देखते हैं। शेष 24.75 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास न तो टेलीविजन है और न ही आस–पास देखने की व्यवस्था है पि र भी इससे यह तो स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र टेलीविजन देखने वाले उत्तरदाताओं की संख्या दो तिहाई से भी अधिक हैं जो कि आधुनिकता एवं प्रगतिशील का परिचायक भी है।

प्रश्न 15 : मोबाइल प्रयोग के प्रति उत्तरदाताओं की अभिरुचि

सारणी संख्या 5.18

क्र.सं.	मोबाइल प्रयोग करने की आवृत्तिआवृत्ति		प्रतिशत
1.	हाँ	325	81.25
3.	नहीं	75	18.75
	योग	400	100.00

सारणी संख्या 5.18 में मोबाइल का प्रयोग करने वालों के सम्बन्ध में जानकारी ली गयी है लगभग 81.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि वे मोबाइल का

उपयोग करते हैं जबकि 18.75 प्रतिशत ने मोबाइल के उपयोग को नकार दिया। यह हमारे ग्रामीण समाज के लिये बहुत बड़ी उपलब्धि है।

राजनीतिक चर्चाओं में भागीदारी

लिपमैन ने कहा कि राजनीतिक विचार अधिकांशतः उस सूचना द्वारा निर्मित होते हैं जो व्यक्ति अपने इर्द–गिर्द के वातावरण से प्राप्त करता है। राजनीतिक घटनाओं में साझेदारी, उनके सम्बन्ध में चर्चा या निजी अनुभव ऐसे ही स्रोत हैं। स्वस्थ जनमत के निर्माण में राजनीतिक चर्चाओं का अपना स्थान है। ग्रामीण क्षेत्र में, खासकर चुनावों के दौरान दुकानों, सार्वजनिक चौपालों, चाय–पान की दुकानों एवं अन्य प्रमुख स्थानों पर होने वाली चर्चाँएँ बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

आधुनिक समय में संचार साधनों में क्रान्ति के कारण देश–विदेश की छोटी से छोटी घटना की जानकारी तुरन्त सम्पूर्ण विश्व में पै ल जाती है। जानकारी की बहुलता ने आम आदमी की सजगता एवं अभिरुचि में वृद्धि की है। नेतृत्व की सजगता भी इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण मानी जा सकती है कि वे राजनीतिक घटनाओं एवं चर्चाओं में कितने एवं किस प्रकार सहभागी बनते हैं। नेतृत्व में आने के पश्चात भी यदि विशेषकर महिलायें, केवल चौके–चूल्हे तक ही स्वयं को सीमित रखेगी, तो प्रशासनिक दक्षता पैदा नहीं हो सकती।

व्यावसायिक स्थिति

व्यवसाय व्यक्ति की सामाजिक स्थिति निर्धारण का एक महत्त्वपूर्ण आधार रहा है। परम्परागत भारतीय समाज में जाति और व्यवसाय का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है तथा जाति की उच्चता और निम्नता के अनुरुप व्यवसायों का विभाजन पवित्र और अपवित्र श्रेणी में किया गया है। निम्न जातियाँ अपवित्र व्यवसायों को सम्पन्न करती

रही है तथा जातियों का व्यवसाय न केवल पवित्र व्यवसाय रहा है वरन् साामजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक लाभ के ृष्टि से भी वह उच्च रहा है। आधुनिक भारतीय समाज में जाति और व्यवसाय का यह घनिष्ठ सम्बन्ध निरन्तर शिथिल होता जा रहा है आधुनिक भारतीय समाज में व्यवसायों की उच्चता और निम्नता का आधार भी परिवर्तित होता जा रहा है। समाज में व्यवसायों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हुई है और उनकी प्रकृति में भी महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे हैं। आर्थिक लाभ, व्यावसायिक उच्चता का प्रमुख आधार बन गया है व्यवसाय में पवित्रता और अपवित्रता की धारणा समाप्त होती जा रही है, कोई भी वर्ग या जाति के लोग किसी भी कार्य को करने में कोई संकोच नहीं कर रहे हैं, समाज में श्रम–विभाजन का सिद्धान्त धीरे–धीरे समाप्त हो रहा है। व्यवसायिक गतिशीलता और उतार–चढ़ाव की मात्रा भी तीव्र हो गयी है। व्यवसाय में प्रवेश का आधार जाति या नातेदारी व्यवस्था न होकर व्यक्ति की शिक्षा, योग्यता एवं प्रशिक्षण हो गया है। व्यावसायिक जीवन में होने वाले इन परिवर्तनों ने व्यक्ति के सामाजिक स्थिति निर्धारण के आधार को अजर्नात्मक आधार बना दिया है और प्राप्त सामाजिक स्थिति के महत्त्व को कम कर दिया है।

सारणी संख्या 5.19

उत्तरदाताओं के व्यवसाय का वर्गीकरण

क्र.सं.	व्यवसाय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	कृषि	255	63.75
2.	व्यापार	70	17.50
3.	नौकरी	45	11.25

4. अन्य 30 7.50

योग 400 100.00

उपर्युक्त सारणी संख्या 5.19 के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि 63.75 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि, 17.50 प्रतिशत व्यापार तथा 11.25 प्रतिशत उत्तरदाता नाकरी करते हैं जबकि 7.50 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य कार्यों को करते हैं। अतः स्पष्ट है कि कृषि कार्यों में संलग्न उत्तरदाता आधे से अधिक हैं। उसके पश्चात् व्यापार कार्यों में संलग्न है। उपरोक्त अध्ययन का निदर्श आधुनिक व्यावसायिक जीवन की विभिन्नता का न केवल पर्याप्त मात्रा में प्रतिनिधित्व करता है, बल्कि व्यवसायों की उच्चता और निम्नता का भी प्रतिनिधित्व करता है।

अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की व्यावसायिक स्थिति के अध्ययन में कृषि कार्यों के अधिक होने का कारण ग्रामीण समाज को सरकार द्वारा दी गयी सहायता में कुछ कृषि कार्यों के अतिरिक्त अन्य व्यवसाय को इसलिये प्राथमिकता दिये गये हैं क्योंकि आधुनिक भारतीय समाज में पश्चिमीकरण का प्रभाव निरन्तर प्रवाह माना है, आपने अपने को आधुनिक समाज में सम्मिलित करने या उसके साथ चलने के लिये अतिरिक्त धन की आवश्यकता के कारण, अन्य व्यवसायों को बढ़ावा मिला है।

अन्य व्यवसायों की मनोवृत्ति

सामाजिक सहभागिता की ृष्टि से व्यक्ति के व्यवसाय का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। भिन्न–भिन्न व्यवसायों में संलग्न व्यक्तियों को सामाजिक जीवन में सहभागिता का असमान अवसर प्राप्त होता है। प्रोपे शन, उच्च सरकारी नौकरी, बड़े व्यापार में संलग्न व्यक्तियों को सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन में भाग लेने का

जितना अवसर प्राप्त होता है, उतना मजदूर वर्ग, दुकानदारी में संलग्न या सरकारी नौकरी में संलग्न व्यक्तियों को नहीं। विभिन्न प्रकार के व्यवसाय, आय के अन्तर को भी प्रभावित करते हैं। जिनके परिणामस्वरुप व्यक्ति के सामाजिक सम्पर्क और अन्तःक्रिया के स्वरुप का भी प्रभावशाली ढंग से निर्धारण होता हैं।

सारणी संख्या 5.20

उत्तरदाताओं के मूल व्यवसाय के अलावा अन्य व्यवसाय के प्रति मनोवृत्ति

क्र.सं.	व्यवसाय की मनोवृत्ति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	270	67.50
2.	नहीं	130	32.50
	योग	400	100.00

उपर्युक्त सारणी संख्या 5.20 के आधार पर विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि उत्तरदाताओं की मूल व्यवसायों के अतिरिक्त अन्य व्यवसाय रुपी मनोवृत्ति भी है अध्ययन में सम्मिलित 400 उत्तरदाताओं में से 67.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अन्य व्यवसायों के प्रति अपनी स्वीकृति हाँ मे दी है जबकि 32.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपने परम्परागत व्यवसाय को ही मान्यता दी है।

सारणी संख्या 5.21

उत्तरदाताओं के अन्य व्यवसायों की प्रकृति का विवरण

क्र.सं.	अन्य व्यवसाय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	डेरी उद्यनोग	140	35.00

2. पोल्ट्री प र्म 120 30.00

3. मत्स्य उद्यनोग 76 19.00

4. अन्य 64 16.00

योग 400 100.00

उपर्युक्त सारणी संख्या 5.21 से स्पष्ट होता है कि सभी उत्तरदाताओं में अन्य व्यवसायों के प्रति भी धारणा है। उत्तरदाताओं के अन्य व्यवसायों के प्रकृति में सर्वाधिक 35.00 प्रतिशत उत्तरदाता डेरी उद्यनोग में लगे हैं जबकि सबसे कम 19.00 प्रतिशत उत्तरदाता म्त्स्य उद्यनोग में लगे हैं। 400 उत्तरदाताओं में 30.00 प्रतिशत उत्तरदाता मुर्गी पालन उद्यनोग में लगे हुए हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि उत्तरदाताओं में परम्परागत व्यवसाय कृष्टि के अतिरिक्त अन्य व्यवसायों को भी वरीयता दी है, जिनका प्रतिशत 16.00 है। यह एक अच्छा प्रयास माना जा सकता है। अतः अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि निदर्श में सम्मिलित उत्तरदाताओं में एक तिहाई उत्तरदाता अपनी स्वीकृति हाँ में देकर यह स्पष्ट किया है कि परम्परागत व्यवसाय के अतिरिक्त भी अन्य व्यवसायों को भी करना चाहिये, क्योंकि सामाजिक परिवर्तन के साथ व्यक्ति अपने आपको समाज में स्थापित नहीं कर सका तो वह समाज में पिछड़ जायेगा।

सन्दर्भ सूची

1. सामाजिक–आर्थिक पत्रिका, पै जाबाद, 1995–96, पृष्ठ 21.

2. तैत्तिरीय आरण्यक, 7.3.

3. हैसले, ए., "द चेन्जिंग प क्शन ऑप यूनिवर्सिटीज' इन ए.एच. हैसले, जीन पक्तलाउड एण्ड सी. अरनाल्ड एनडर्शन (इड्स) एजूकेशन, इकोनॉमी एण्ड सोसाइटी (न्यूयार्क, द फ्री प्रेस ऑप ग्लेन्को (1961), पृष्ठ 458.

4. प्लेटो, "ग्रीस पॉलिटिकल थ्रो एण्ड थ्योरी इन द प ोर्थ सेन्चुरी : द्वारा ई. वार्कर इन द कैम्ब्रिज एनसियन्ट हिस्ट्री, भाग–6, अध्याय 16 (12972).

5. टयूनिन मेल्विन एण्ड पे ल्डमैन अरनाल्ड, एस., "स्टेट्स परस्पेक्टिव एण्ड क्लास स्ट्रेक्चर इन प्यूरेटो राइस", अमेरिकन सोसियोलॉजिकल रिव्यू (अगस्त, 1956), पृष्ठ 470.

6. गोरे, एम.एस., "सम प्रोब्लमस ऑप एजूकेटेड यूथ इन इण्डिया" इन ए. एप्पाडोराई (एड) इण्डिया–स्टडिस इन सोसल एण्ड पॉलिटिकल डेवलपमेन्ट, 1847–1967 (इण्डिया : न्यू दिल्ली, एशिया पब्लिशिंग हाऊस 1965), पृष्ठ 79.

7. मप र्ी, रेमण्ड, जे. एण्ड रिचर्ड डी.टी. मोरिस "अक्पेशनल सिटस सब्जेक्ट्स सोशल क्लास आइडेन्टिपि केशन एण्ड पॉलिटिकल एपि लेशन, अमेरिकन सोशियोलॉजिकल रिव्यू, नं. 26 (जून 1961), पृष्ठ 383–392.

8. क्लास, डी.बी., एण्ड हॉल, जे.आर., सोशल मोबालिटी इन ब्रिटेन : ए स्टउी ऑप इण्टरजेनरेशन चेन्जेज इन स्टेटस इन डी.बी. ग्लास (इड), सोशल मोबिलिटी इन ब्रिटेन (लन्दन : रुट लेज एण्ड केगन पॉल, 1960), पृष्ठ 177.

9. पाण्डे, राजेन्द्र, इबिड, पृष्ठ 121.

10. डेविड, ग्लास 'एजूकेशनल एण्ड सोशल चेन्ज इन माडर्न वर्ल्ड', इन हार्सले (इडस) एजूकेशनल इकॉनामी एण्ड सोसाइटी (न्यूयार्क : द फ्री प्रेस ऑप गलेन्को 1961), पृष्ठ 395.

11. मेहरा, एल.एस., "यूथ : इन मार्डन सोसाइटी" चुग पब्लिकेशन इलाहाबाद (इण्डिया), 1977, पृष्ठ 138.